E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
IJAAS 2019; 1(1): 124-125
Received: 27-05-2019
Accepted: 29-06-2019

डॉ० ममता तिवारी
सहायक शिक्षिका (संस्कृत),
रा०कृत बलिराम उ० मा०,
विद्यालय, सकरा, मुजफ्फरपुर,
बिहार, भारत

Corresponding Author:
डॉ० ममता तिवारी
सहायक शिक्षिका (संस्कृत),
रा०कृत बलिराम उ० मा०,
विद्यालय, सकरा, मुजफ्फरपुर,
बिहार, भारत

स्मृतियों में एक "मनुस्मृति"

डॉ० ममता तिवारी

सारांश
मनुस्मृति भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है। इसकी गणना विश्व के ऐसे ग्रंथो में की जाती है, जिनसे मानव ने वैयक्तिक आचारण और समाज रचना के लिए प्रेरणा प्राप्त की है। इससे प्रश्न केवल धार्मिक आस्था या विश्वास का नहीं है। मानव जीवन की आवश्यकताओं की पूर्त्ति किसी भी प्रकार आपसी सहयोगत या सुरूचिपूर्ण ढ़ंग से हो सके। यह अपेक्षा और आकांक्षा प्रत्येक सामाजिक व्यक्ति में होती है। विदेशों में इस विषय पर पर्याप्त खोज हुई है। हिन्दु समाज में तो इसका स्थान वेदत्रयी के उपरान्त है। मनुस्मृति भारतीय आचार संहिता का विश्वकोष है। मनुस्मृति में बारह अध्याय तथा दो हजार पाँच सौ श्लोक है। जिनमें सृष्टि की उत्पति, संस्कार नित्य और नैमितिक कर्म आश्रमधर्म, वर्णधर्म, राजधर्म व प्रायश्चित आदि विषयों का उल्लेख है।

प्रस्तावना
हिन्दू धर्म का प्राचीन धर्मशास्त्र मनुस्मृति है इसे मानव–धर्म–शास्त्र, मनुसंहिता आदि नामो से जाना जाता है। यह उपदेश के रूप में है जो मनु द्वारा ऋषियों को दिया गया मनुस्मृति वह धर्मशास्त्र है जिसकी मान्यता जग विख्यात है। इसके बाद के धर्म ग्रन्थकारों ने मनुस्मृति को एक सन्दर्भ के रूप में स्वीकारते हुए इनका अनुसरण किया है।
धर्मशास्त्री ग्रंथकारो के अतिरिक्त शंकराचार्य, शबर स्वामी जैसे दर्शनिक भी प्रमाण रूपेण इस ग्रन्थ को उदृत किया है। परम्परानुसार यह स्मृति स्वायंभुव मनु द्वारा रचित है। वैवस्वत मनु या प्राचनेस मनु द्वारा नहीं। मनुस्मृति से यह भी पता चलता है कि स्वायंभुव मनु के मूलशास्त्र का आश्रय कर भृगु ने उस स्मृति का उपवृंहण (परिवर्धन) किया था, जो प्रचलित मनुस्मृति के नाम से प्रसिद्ध है। इस भार्गवीय मनुस्मृति की तरह नारदीया मनुस्मृति भी प्रचलित है।
मनुस्मृति वह धर्मशास्त्र है जिसकी मान्यता जग विख्यात है न केवल भारत में अपितु विदेशों में भी इसके प्रमाणों के आधार पर निर्णय होते रहे है और आज भी होते है। अतः धर्मशास्त्र के रूप में मनुस्मृति को विश्व की अमूल्यनिधि माना जाता है। भारत में वेदो के उपरान्त सर्वाधिक मान्यता और प्रचलन मनुस्मृति का ही है। इसमें चारों वर्णों, चारो आश्रमो, सोलह संस्कारो तथा सृष्टि उत्पत्ति के अतिरिक्त राज्य की व्यवस्था, राजा के कर्त्तव्य, भाँति–भाँति के विवादों, सेना का प्रबंध आदि उन विषयों पर परामर्श दिया गया है जो मानव मात्र के जीवन में घटित होना संभव है। यह सर्व धर्म–व्यवस्था वेद पर आधारित है। मनु महाराज के जीवन और उनके रचनाकाल के विषय में इतिहास पुराण स्पष्ट नहीं है तथापि सभी स्वर से स्वीकार करते है कि मनु आदिपुरूष थे और उनका यह शास्त्र आदिशास्त्र है।

"देशाधर्मान्जाति धर्मान्कुल धर्माश्च शाश्वताम।
पाखण्ड गणधर्माश्च शास्त्रोस्मिन्नुक्तवान्मनुः।।"

महर्षि मनु ने अपने इस ग्रंथ में समस्त प्रकार के देश, धर्मो, विभिन्न वर्णो तथा जातियो के परम्परागत आचार–विचार का कुल धर्मो का तथा लोक प्रचलित वेद विरूद्ध त्यक्त धर्मो का वर्णन किया है। वेद विहित मनुष्य की जीवन पद्धति और आचार संहिता का प्रतिपालन करने के लिए समय–समय पर अनेक स्मृतियो की रचना हुई जिनमें मनुस्मृति सर्वाधिक लोकप्रिय है क्योंकि इसमें व्यक्ति समाज का समग्र रूप से विवेचन है। एक अच्छे सामाजिक मनुष्य को क्या करना चाहिए? क्या नहीं करना चाहिए? जैसे प्रश्नों की व्याख्या इसमें की गई है। यद्यपि समय के बदलते परिवेश में इस ग्रंथ की कुछ व्यवस्थाएँ विवादास्पद है या अपना अर्थ खो चुकी है। फिर भी भारतीय आचार संहिता का मूलभूत ग्रंथ है यह मनुस्मृति।
इसमें जिन नियमों का उल्लेख है वे मानव को सभ्य, सुसंस्कृत व उतरोत्तर विकास की ओर ले जाने में आज भी उतने ही सक्षम है। राजा–प्रजा के कर्म और अधिकारो की व्याख्या एवं समाज में प्रत्येक नर–नारी के लिए आचरणीय नियमों का वर्णन मनुस्मृति में है।

आप इस ग्रंथ का अध्ययन कर जान सकेगें कि हजारों वर्ष पूर्व की गई हिन्दू समाज की संरचना आज भी लगभग इन्हीं नियमों पर आधारित है।

मनुस्मृति का धर्मशास्त्र भी कहा जाता है। धर्म शब्द का अर्थ केवल पुजा–पाठ करना और मंदिर में जाना ही नहीं है धर्म शब्द से उन सब बातों का बोध होता है जो इस जीवन में मनुष्य के लिए आवश्यक है। हमारी जीवन शैली और सामाजिक पद्धति श्रेष्ठ कैसे बने इसके लिए जो सामाजिक नियम बनाए जाते है वे धर्म के अन्तर्गत आते है।

हमारा भारतीय समाज उत्तरोत्तर किस प्रकार प्रगति को प्राप्त हुआ वह सामाजिक और धार्मिक नियम क्या ये जो हमें उच्चतम जीवन जीने की कला प्रदान करते रहे। यह सब कुछ आप धर्मशास्त्र मनुस्मृति से जान सकेंगे। अब प्रबुद्ध व्यक्ति इससे दिशा निर्देश प्राप्त करके सामाजिक जीवन में समयोचित परिवर्त्तन लाकर इसे सार्थक बनाए।

स्वायंभुव मनु हमारे आदि पुरूष थे। उनका विवाह शतरूपा से हुआ। उन्हीं की हम सब संतान है। उन्होंने सोचा कि जब मनुष्य की सृष्टि होगी, मनुष्य का विचार बढ़ेगा, तब रहने के लिए नियम की आवश्यकता होगी। बिना नियम के कोई समाज चल नहीं सकता किस प्रकार रहने से समाज में शान्ति रहेगी और अपराधियों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए। यह सब आवश्यक समझकर हमारे पूर्वज मनु महराज ने इस सब बातों पर विचार किया और मनुस्मृति की रचना कर डाली।

निष्कर्ष

हम यहाँ तक पहुँचते है कि मनुस्मृति में चित्त शुद्धि से लेकर पूरी समाज व्यवस्था तक कई ऐसी सुन्दर बाते है जो आज भी हमारा मार्गदर्शन कर सकती है। जन्म के आधार पर जाति और वर्णव्यवस्था पर सबसे पहली चर्चा मनुस्मृति में की गई है। मनुस्मृति को आज जितना महत्त्वपूर्ण माना जाता है उसके लिए तीन बाते जिम्मेदार है।

1. भारत पर शासन करने वाली अंग्रेज कम्पनी जिसने इस ग्रंथ को सिद्धान्तों का मूल ग्रंथ मान लिया।
2. बनारस के पंडित जिन्होंने अंग्रेजी कम्पनी को यह सीख दी की मनुस्मृति ही हिन्दु समाज का मूल ग्रंथ है जिसके आधार पर हिन्दु समाज चलता है।
3. इनमें सर्वोपरि वह ब्राह्मण है जो गरीब है जिसके हाथ में सत्ता नहीं है, जो अपने मन का मालिक है।

सन्दर्भ

1. ऋतिक्षमा दमोस्तेयं, शौचं इन्द्रियनिग्रहः।
   धीर्विधा सत्यं अक्रोधो, दशकं धर्मलक्षणम्। 6: 92
2. नास्य छिद्रं परोविधा द्विधाच्छिद्रं परस्य तु ।
   गूहेत्कूर्म इवांगानि रक्षोद्विपरमात्मनः।। 7 : 104
3. वकवच्चिन्त्येदर्थान सिंहवच्च पराक्रमेत।
   वृकवच्चावलुम्पेत शशवच्च विनिष्पतेत्।। 7: 106
4. तैलक्षौमे चिताधूमे मिथुने क्षौर कर्मणि।
   तावद्भदवति चांडालः यावद् स्नानं न समाचरेत।।
5. अनुमतां विशसित निहन्ता क्रमविक्रयी।
   संस्कर्त्ता चोपहर्त्ता च खादकश्चचेति घातकाः।। 5: 51
6. अमात्य राष्ट्र दुर्गा र्यदण्डाख्या : प×चः चापरा :।
   प्रत्येक कथिता होताः संक्षेपेण द्विसप्ततिः ।। 7: 147